अभिव्यक्ति की आज़ादी एवं सीखने की स्वायत्ता– दीवार पत्रिका

केवलानन्द काण्डपाल

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान में कार्य नियोजित होने के कारण प्रारंभिक विद्यालयों में बच्चों के साथ काम करने के बहुत सीमित अवसर उपलब्ध हो पाते हैं परंतु इस संस्थान में कार्यरत होने का एक लाभ अवश्य मिलता है कि विद्यालयों के अनुश्रवण क्रम में नवाचारी गतिविधियों को जानने समझने के पर्याप्त मौके मिलते हैं। इन अनुभवों का संज्ञान लेकर सेवापूर्व एवं सेवारत शिक्षक प्रशिक्षणों में इनका लाभ लेने का हमेशा प्रयास रहता है। विगत में अनुश्रवण क्रम में बाल अखबार, बाल पत्रिकाएँ एवं बाल शोध जैसी नवाचारी गतिविधियों के समृद्ध अनुभव भी मिले। जनपद के कुछ विद्यालयों में दीवार पत्रिका का बीजारोपण हुआ है। जनपद के ब्लाक संसाधन केंद्र गरूड़ में आयोजित बाल मेले (सपनों की उड़ान) कार्यक्रम में रा. उ. प्रा. वि. चौरसों (क्षेत्र् गरूड़) के बच्चों द्वारा विकसित दीवार पत्रिका 'कोपलें' के अवलोकन का सुअवसर मिला और अध्यापकों के साथ-साथ बच्चों से इसकी विकास प्रक्रिया को विस्तार से जानने एवं समझने का अवसर भी। इस आलेख में दीवार पत्रिका/बाल अखबार के शैक्षणिक निहितार्थों की जाँच परख करने का प्रयास किया गया है।

इस तथ्य को लेकर शिक्षाविदों में लगभग आम सहमति है कि बच्चा अपने ज्ञान का निर्माण स्वयं करता है तथा इस क्रम में अध्यापक एक सुगमकर्ता के रूप में बच्चों की ज्ञान निर्माण प्रक्रिया में सहभागिता निभाता है, जिससे सीखना बच्चों के लिए अर्थपूर्ण (Meaningful) बन सके। इस विचार को रचनावाद (Constructivism) के नाम से संबोधित किया जाता है। यह जितना सरलीकृत दिखलाई पड़ता है, व्यवहार में अपनाना उतना आसान भी नहीं है। इसके लिए बच्चे, बच्चे की सीखने की प्रक्रिया

* जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान बागेश्वर, पो0 –बागेश्वर, जनपद-बागेश्वर, पिन-263642, उत्तराखंड

एवं अध्यापन की समावेशी प्रक्रिया के प्रति गहन संवेदनशीलता की आवश्यकता होती है। इससे भी एक कदम आगे बढ़कर कहा जाए कि सीखने सिखाने की प्रक्रिया लोकतांत्रिक होनी चाहिए। लोकतांत्रिक प्रक्रिया से यहाँ हमारा आशय है कि एक ऐसी प्रक्रिया जिसमें बच्चे को अपनी समझ (बहुत बार नासमझी) को अभिव्यक्त करने के अवसर हों, दूसरों की बात सुनने का हुनर/धैर्य हो और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इस समस्त उपक्रम में बच्चे को अपनी हँसी उड़ाए जाने का भय न हो। साथ ही सहमत एवं असहमत होने की आज़ादी भी हो।

हमारे विद्यालयों में ज्ञान निर्माण एवं लोकतांत्रिक प्रक्रिया अपनाने के अवसर कहाँ-कहाँ मिल सकते हैं? बाल अखबार/ दीवार पत्रिका, बाल शोध, बच्चों द्वारा प्रोजेक्ट आदि में ये अवसर अधिक स्पष्ट नज़र आते हैं। विगत में अनुश्रवण के क्रम में कतिपय विद्यालयों में इस दिशा में किए गए प्रयासों का अवलोकन करने का सुअवसर मिला। सराहनीय प्रयास होने के बावजूद कुछ मुद्दों को संबोधित करना ज़रूरी है, मसलन-

1. बाल अखबार - बाल पत्रिका एक वार्षिक गतिविधि के रूप में अपनाई जाती है वर्ष भर में चक्रीय निरन्तरता न होने के कारण सीखने की प्रक्रिया में निरन्तरता नहीं रह पाती है। बच्चों को आवश्यक पुनर्बलन भी नहीं मिल पाता।
2. बाल शोध - प्रोजेक्ट दो प्रकार से आयोजित किए जाते हैं; प्रथम किसी ऐतिहासिक/धार्मिक/सांस्कृतिक तथ्य पर खोजबीन एवं जाँच पड़ताल, इसका अभिलेखीकरण भी किया जाता है। द्वितीय स्थानीय ज्ञान यथा औषधि/जड़ी-बूटी/माप-तौल की इकाईयाँ/स्थानीय शिल्प से संबंधित वस्तुओं एवं उत्पादों का एकत्रीकरण एवं उनके बारे में मौखिक प्रस्तुतीकरण। अत: यह प्रयास संस्थागत स्वरूप प्राप्त नहीं कर पाते हैं।

इधर हाल ही में जनपद के कुछ विद्यालयों में दीवार पत्रिकाएँ विकसित की गईं हैं। इन विद्यालयों में रा. उ. प्रा. वि. सिमगड़ी (क्षेत्र कपकोट) एवं रा. उ. प्रा. वि. चौरसों (क्षेत्र गरूड़) प्रमुख हैं। यद्यपि इससे पहले से ही यह कार्यक्रम जनपद पिथौरागढ़ के उत्साही एवं स्वप्रेरित शिक्षकों द्वारा अपने-अपने विद्यालयों में चलाया जा रहा था। (वस्तुत: दीवार पत्रिका के विचार प्रवर्तन का श्रेय श्री महेश पुनेठा को जाता है, जो वर्तमान में पिथौरागढ़ जनपद के सरकारी विद्यालय में अध्यापक के रूप में अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। स्वप्रेरित होने के साथ-साथ दीवार पत्रिका के विचार को दृढ़ता के साथ आगे बढ़ा रहे हैं।)

दीवार पत्रिका की रचना प्रक्रिया

बच्चे अपनी कविता, कहानी, चित्र, खोज आदि को सामूहिक रुप से प्रदर्शित करतें है। इस प्रक्रिया में बच्चे सबसे पहले अपनी पत्रिका का नाम तय करते हैं। इसमें समाहित की जाने वाली सामग्री का निर्धारण आपसी विचार विमर्श से करते हैं। तत्पश्चात उत्साह के साथ सामग्री तैयार करने, जुटाने में सलग्न हो जाते हैं। यह सामग्री बच्चों की अपनी कविता, कहानी, स्थानीय, इतिहास, संस्कृति, पर्यटन स्थल, पुरातात्विक स्थल, कवि, शिल्प, मेला आदि के बारे में कुछ भी हो सकता है। इस एकत्रित सामग्री

में से कौन-कौन सी सामग्री पत्रिका में शामिल होंगी। इसका निर्णय बच्चों द्वारा मिल-जुलकर प्रजातांत्रिक ढ़ंग से किया जाता है। इसे विद्यालय में उपलब्ध बोर्ड/दीवार पर इस प्रकार से प्रदर्शित किया जाता है कि यह बच्चों की सहज पहुँच में रहे और विद्यालय में आने-जाने वालों को भी इसे देखने के अवसर मिल सके। कुछ विद्यालयों ने इसमें भी नवाचारी तरीके अपनाए हैं। चार्ट पेपरों को क्रमबद्ध रूप से जोड़कर एक बड़े चार्ट/पर्दे का रूप दिया जाता है, जिससे अधिक से अधिक अपनी रचनाओं को इसमें चस्पा कर सकें। इसे दीवार पर प्रदर्शित करने के कारण इसे दीवार पत्रिका कहना तर्क संगत प्रतीत होता है।

अध्यापक इस प्रक्रिया में एक सुगमकर्ता के रूप में भागीदार होता है और कभी-कभी आवश्यकता पड़ने पर मध्यस्थ की भूमिका में होता है और सुझाव देता है। इसमें भी अच्छी बात यह है कि इस सुझाव पर बच्चे मिल-जुल कर निर्णय लेते हैं कि इसको अमल में कैसे लाया जाए?

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 कहती है कि बच्चों को ज्ञान निर्माण के अवसर दिए जाएँ। दीवार पत्रिका की विकास/रचना प्रक्रिया में बच्चों को यह अवसर बहुलता में उपलब्ध रहते हैं। रा. उ. प्रा. वि. चौरसों (क्षेत्र गरूड़) की दीवार पत्रिका 'कोंपलें' के संदर्भ में बच्चों एवं अध्यापकों से बातचीत के क्रम में महसूस हुआ कि इस उपक्रम द्वारा बच्चों को अभिव्यक्ति की आज़ादी के अवसर दिए जाते हैं। मिकी माउस के चित्र से लेकर, स्थानीय अल्पना, मंदिर के इतिहास का वर्णन, कविता, कहानी, लोक कथा, रीति-रिवाज़, खान-पान, मेले-त्यौहार आदि अनेक पठनीय एवं उपयोगी सामग्री बच्चों द्वारा सृजित की गई है। इतना ही नहीं बच्चों ने जो कुछ भी रचा है, उस पर उनका पूर्ण अधिकार भी नज़र आता है। अपनी रचना/सृजन के बारे में बच्चे विस्तार से बात करने को उत्साहित दिखाई दिए। ये सभी तथ्य कुछ बातों के पुख्ता साक्ष्य प्रदान करते हैं, जैसे- स्थानीय ज्ञान को पाठ्यचर्या के साथ किस प्रकार समाहित किया जा सकता है? विद्यालय में सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में पाठ्य पुस्तकों से बाहर निकलने के अवसर किस प्रकार खोजे जा सकते हैं? बच्चों को रटे-रटाए जवाब देने के बजाए अपने शब्दों में अपने -अपने अनुभवों को अभिव्यक्त करने के अवसरों का किस प्रकार उपयोग किया जा सकता है ? आदि महत्वपूर्ण शिक्षण शास्त्र से जुड़े महत्वपूर्ण बिंदुओं पर उपयोगी अर्न्तदृष्टि प्राप्त होती है। बच्चों में मिल-जुल कर काम करने, अन्त: क्रिया करने, निर्णय लेने एवं दूसरों के विचारों को महत्व देने जैसे

अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करने के मौके और सहपाठियों के साथ बाँटने के मौके देना बच्चों में प्रोत्साहन और जुड़ाव को पोषण देने के शक्तिशाली तरीके हैं। स्कूलों में अक्सर हम कुछ गिने-चुने बच्चों को ही बार-बार चुनते रहते हैं। इस छोटे समूह को तो ऐसे अवसरों से फ़ायदा होता है, उनका आत्मविश्वास बढ़ता है और वे स्कूल में लोकप्रिय हो जाते हैं। लेकिन दूसरे बच्चे बार-बार उपेक्षित महसूस करते हैं और स्कूल में पहचाने जाने और स्वीकृति की इच्छा उनके मन में लगातार बनी ही रहती है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005

जीवन कौशलों एवं मूल्यों के विकास में यह विधा उपयोगी प्रतीत होती है।

फ़ील्ड के इन अनुभवों को संस्थान में डी. एल. एड. प्रशिक्षु–शिक्षक साथियों से साझा किया गया, विशेषकर बाल अखबार/दीवार पत्रिका के अनुभवों को विस्तार से साझा किया गया। इसमें निम्न उद्देश्य निहित थे-

पहला- डी. एल. एड. प्रशिक्षु–शिक्षक साथियों को अभिप्रेरित करना, जिससे वे भविष्य में अपने अपने विद्यालयों में इस विधा को अपनाने के बारे में निर्णय ले सकें।

दूसरा- इस विधा को विद्यालय की स्थायी गतिविधि किस प्रकार बनाया जा सकता है? और इसका उपयोग अन्य किस-किस प्रकार से शैक्षणिक संदर्भों में किया जा सकता है? इस बारे में प्रशिक्षु-शिक्षकों से विमर्श करना।

मूल मंतव्य था प्रशिक्षु– शिक्षकों को इस मुद्दे पर संवेदीकृत करना एवं इस विधा के बारे में इनकी राय/सुझाव/प्रतिक्रिया का आकलन करना। यह एक उपयोगी प्रयास रहा। प्रथम बात जो सामने आई वह यह थी कि यह विधा विद्यालयों में ज़रूर अपनाई जानी चाहिए। इससे प्रशिक्षु-शिक्षक साथियों की तत्परता (Readiness) का आकलन करने में मदद मिली। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि इस विधा को शैक्षणिक संदर्भों में अपनाने हेतु बहुमूल्य सुझाव सामने आए। इस विमर्श के आलोक में बाल अखबार/दीवार पत्रिका के शिक्षाक्रम में उपयोग से संबंधित सुझाव निम्नवत प्रस्तुत किए जा सकते हैं-

1. बाल अखबार/ दीवार पत्रिका की निरन्तरता– इस संदर्भ में यह विचार सामने आया कि निरन्तरता का आशय वर्ष में एक बार ही उपक्रम न हो वरन एक शैक्षिक सत्र में इसकी आवृत्ति बढ़े। इसके परिणामस्वरूप न केवल अधिक से अधिक बच्चों की इसमें भागीदारी बढ़ेगी बल्कि पहले से सक्रिय बच्चों को अपने ज्ञान के आधार को जाँचने एवं परखने के अधिक अवसर उपलब्ध हो सकेंगे।
2. पीयर लर्निंग/समूह अधिगम (Peer Learning/ Group Learning) हेतु उपयुक्त विधा– रचनावाद की एक धारा सामाजिक रचनावाद के प्रतिपादक वायगोत्स्की (Vygotsky) का मत है कि बच्चा अपने परिवेशीय समाज से अन्त:क्रिया करके ज्ञान की रचना करता है जिसमें उसके सांस्कृतिक संदर्भों की अहम भूमिका होती है। जॉन ड्रयूई (John Dewey) कहते हैं 'स्कूल के पर्यावरण का यह काम भी है कि वह सामाजिक पर्यावरण के विभिन्न तत्वों में संतुलन कायम करे और यह सुनिश्चित करे कि प्रत्येक बच्चे को सीमित दायरे से बाहर निकालकर व्यापक परिवेश के संपर्क में आने के पर्याप्त अवसर मिलें। ' सीखने की प्रक्रिया का अभिन्न अंग है- आसपास के वातावरण, प्रकृति, चीज़ों व लोगों से कार्य व भाषा दोनों के माध्यम से अंत:क्रिया करना। इस दृष्टि से विचार करें तो समूह अधिगम/पीयर लर्निंग का महत्व स्पष्ट दिखाई देता है। दीवार पत्रिका/बाल अखबार से संबंधित गतिविधियाँ बच्चों को समूह अधिगम/ पीयर लर्निंग के अवसर देते हैं, जिनके आलोक

में बच्चे अपने-अपने सामाजिक एवं सांस्कृतिक संदर्भों में ज्ञान की रचना करने में सहूलियत महसूस कर सकते हैं।

3. अध्यापक की भूमिका– बच्चों की ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया में अध्यापक की भूमिका सुगमकर्ता की होती है। अधिक सरल शब्दों में कहा जाए तो अध्यापक इस प्रक्रिया में मध्यस्थ (Negotiator) के रूप में भूमिका निभाता है और एक तरह से दिशा निर्देश देता हैं। जॉन ड्रयूई (John Dewey) का अभिमत है कि 'दिशा निर्देश अपेक्षाकृत निष्पक्ष शब्द है और इस तथ्य का सूचक है कि जिस बच्चे को निर्देश दिया जाता है उसकी सक्रिय प्रवृत्तियों को लक्ष्यहीन होकर बिखरने देने के बजाए एक निरन्तर क्रम की ओर ले जाए जाता है।' बच्चों के संज्ञान में अध्यापकों की भूमिका भी बढ़ सकती है यदि वे ज्ञान निर्माण की उस प्रक्रिया में ज़्यादा सक्रिय रूप से शामिल हो जाएँ जिसमें बच्चे व्यस्त हैं। सीखने की प्रक्रिया में व्यस्त एक बालक या बालिका अपने ज्ञान का सृजन खुद करता/करती है। बच्चों को ऐसे प्रश्न पूछने की अनुमति देना जिनसे वे स्कूल में सिखाई जाने वाली चीज़ों का संबंध बाहरी दुनिया से स्थापित कर सकें, उन्हें एक ही तरीके से उत्तर रटने और देने की बजाए अपने शब्दों में जवाब देने और अपने अनुभव बताने के लिए प्रोत्साहित करना। ये सभी बच्चों की समझ विकसित करने में छोटे किन्तु बेहद महत्तपूर्ण कदम हैं। बच्चों द्वारा बाल अखबार/दीवार पत्रिका के विकास की प्रक्रिया में अध्यापक सुगमकर्ता के बेहतरीन किरदार में नज़र आता है और बच्चे सीखने की स्वायत्तता का आनंद ले सकते हैं। सीखने-सिखाने का प्रजातांत्रिक तरीका बच्चों में अभिव्यक्ति की आज़ादी का बीजारोपण कर सकता है।

4. ज्ञान को स्थानीय प्रयोजनशीलता से जोड़ना– शिक्षा व्यवस्था उस समाज से अलग-थलग होकर काम नहीं करती जिसका वह एक भाग है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 कहती है कि 'रचनात्मक परिप्रेक्ष्य में सीखना ज्ञान के निर्माण की एक प्रक्रिया है। विद्यार्थी सक्रिय रूप से पूर्व प्रचलित विचारों में उपलब्ध सामग्री/गतिविधियों के आधार पर अपने लिए ज्ञान की रचना करते हैं (अनुभव)। ' जॉन ड्रयूई (John Dewey) का कहना है कि 'स्कूल के अंदर सीखने की निरन्तरता स्कूल के बाहर सीखने (अधिगम)/ किए जाने वाले कार्यों के साथ होनी चाहिए। ' बच्चे का समुदाय और उसका स्थानीय वातावरण अधिगम प्राप्ति के लिए प्राथमिक संदर्भ होता है जिसमें ज्ञान अपना महत्व अर्जित करता है। परिवेश के साथ अंत:क्रिया करके ही बच्चा ज्ञान सृजित करता है और जीवन में सार्थकता पाता है। स्कूल निर्देशित शिक्षा का स्थान होता है, लेकिन ज्ञान सृजन में तो निरंतरता होती है अत: वह स्कूल के बाहर भी होता रहता है। बाल अखबार/दीवार पत्रिका के माध्यम से ऐसे अवसरों की प्रचुर संभावना दिखाई देती है, विशेषकर तब जबकि बच्चों द्वारा किए गए व्यक्तिगत/सामूहिक बाल शोध,

प्रोजेक्ट, सामाजिक सर्वेक्षण, चर्चा-परिचर्चा, बातचीत आदि के अनुभवों को साझा करने के अवसरों के रूप में दीवार पत्रिका का उपयोग किया जाए।

5. हितधारकों को बच्चे की प्रगति के बारे में सूचना देने का उपयुक्त माध्यम– बच्चे की शैक्षणिक एवं सह-शैक्षणिक प्रगति के बारे में कतिपय हितधारक सूचना/साक्ष्य प्राप्त करने की आकांक्षा रखते हैं। माता-पिता एवं अभिभावकों की रुचि इस बात में होती है कि उनका बच्चा/बच्ची अपने विषयगत क्षेत्रों में किस प्रकार से आगे बढ़ रहे हैं? खेल-कूद एवं अन्य गतिविधियों में किस प्रकार प्रदर्शन कर रहा है? विद्यालय की उत्सुकता विद्यालय के समग्र प्रदर्शन के साथ-साथ विभिन्न क्षेत्रों में आगे बढ़ रहे बच्चों की उपलब्धि में भी होती है। इसी प्रकार शैक्षिक प्रशासन, समुदाय आदि विभिन्न हितधारक अलग अलग कारणों से बच्चे एवं विद्यालय की प्रगति में रुचि रखते हैं और इसके संदर्भ में जानने -समझने को उत्सुक रहते हैं।

   दीवार पत्रिका एवं बाल अखबार के माध्यम से कुछ हद तक इससे मदद अवश्य मिल सकती है। हितधारकों की दृष्टि से इसे ग्रहणीय बनाने के लिए आवश्यक होगा कि दीवार पत्रिका/बाल अखबार में बच्चे के योगदान की विस्तृत आख्या बच्चे की बॉक्स फ़ाइल में उपलब्ध कराई जाए। बच्चे के समेटिव असेसमेट (Summative Assessment) में इसका उपयोग करने के लिए रणनीतिक प्रयास करने होंगे। बच्चों के वार्षिक मूल्यांकन में इसका संज्ञान लेते हुए बच्चे की प्रगति की ब्यौरे वार रिर्पोटिंग करने का आवश्यकता होगी। यह विधा बच्चे को सीखने में मददगार साबित हो सकती है। अध्यापक अपनी शिक्षण रणनीतियों में इसके आधार पर ज़रूरी बदलाव ला सकते हैं, बच्चे को उसके सीखने के संदर्भ में महत्वपूर्ण पश्चपोषण दे सकते हैं। उदाहरण के लिए- यदि किसी बच्चे ने दीवार पत्रिका में कोई कहानी लिखी है।

   भाषा की दृष्टि से देखें तो यह उम्दा भाषा कौशल का साक्ष्य है परंतु यह हो सकता है कि इस कहानी में कतिपय व्याकरणीय त्रुटियाँ हों। बच्चे के लेखन कौशल को परिमार्जित करने के लिए अपनी शिक्षण रणनीतियों में बदलाव हेतु अध्यापक इसका संदर्भ ले सकता है। यहाँ पर यह कहना ज़रूरी है कि दीवार पत्रिका में अमुक बच्चे की कहानी के बारे में व्याकरणीय गलतियों के लिए नकारात्मक फ़ीडबैक बच्चे की सृजनशीलता एवं कल्पनाशीलता को अवरूद्ध कर देगा। अत: इस मामले में गहन संवेदनशीलता ज़रूरी होगी।

6. बच्चे की बॉक्स फ़ाइल/ पोर्टफ़ोलियो एवं दीवार पत्रिका का समन्वित प्रयोग– उत्तराखंड राज्य में बच्चे की बॉक्स फ़ाइल/पोर्टफ़ोलियो को बच्चे की प्रगति के आँकलन हेतु प्रयोग करने का शासकीय निर्देश है। इसका उपयोग किस प्रकार किया जाए? इस बात को लेकर अध्यापकों में असमंजस दिखाई देता है। विमर्श के दौरान सहमति के कुछ बिंदु उभर कर सामने आए।

(अ) बॉक्स फ़ाइल/पोर्टफ़ोलियो को बच्चे की संज्ञानात्मक एवं सह-संज्ञानात्मक प्रगति की अंकना के क्रम में उपयोग में लाया जाना चाहिए। इस प्रगति के बारे में बच्चे को आवश्यक पश्चपोषण की आवश्यकता होने पर यह पश्चपोषण इस प्रकार दिया जाए कि वह बच्चे को आगे सीखने में मदद करे और पाठ्यचर्या के लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद कर सके।
(ब) बच्चे को भी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के बारे में बॉक्स फ़ाइल/पोर्टफ़ोलियो में अपने अनुभवों को अंकना करने की आज़ादी हो। मसलन वह लिख सके कि अमुक कक्षा में अमुक पाठ/संबोध उसकी समझ में नहीं आया, उसे अभी और कुछ मदद की दरकार है, कक्षा के अनुभवों को लेकर उसका अभिमत क्या है? बच्चे का यह फीडबैक उपयोग अध्यापक द्वारा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में बदलाव/सुधार या समायोजन के लिए किया जाए।
(स) दीवार पत्रिका/बाल अखबार के विकास में बच्चे के योगदान को बॉक्स फ़ाइल/पोर्टफ़ोलियो में शामिल किया जाए। एक यह विचार सामने आया कि बच्चे द्वारा दीवार पत्रिका/बाल अखबार में किए गए योगदान की दो प्रतियाँ तैयार की जाएँ- एक दीवार पत्रिका/बाल अखबार के लिए और दूसरी बॉक्स फ़ाइल/पोर्टफ़ोलियो के लिए। इससे बच्चे को व्यक्तिगत तौर पर फ़ीडबैक देने की सुविधा होगी परंतु इसमें दोहराव की संभावना है। अत: अध्यापक द्वारा इस योगदान की बॉक्स फ़ाइल/पोर्टफ़ोलियो में अंकना को उपयुक्त माना गया।
(द) सत्र के अंत में या फिर जब भी आवश्यकता हो समेटिव असेसमेंट के क्रम में बच्चे की बॉक्स फ़ाइल/पोर्टफ़ोलियो के साथ-साथ दीवार पत्रिका/बाल अखबार में बच्चे के योगदान एवं भूमिका का संज्ञान लिया जाना चाहिए। दीवार पत्रिका/बाल अखबार के विकास क्रम में बच्चों में समूह स्वामित्व का भाव दृढ़ होता है, यह अच्छा भी है परंतु इसमें Assessment for Learning के अवसरों की सीमितता महसूस होती है। इस दृष्टि से बॉक्स फ़ाइल/पोर्टफ़ोलियो महत्वपूर्ण उपकरण साबित हो सकता है और यह बच्चे में अपने प्रयासों की Ownership के भाव को मज़बूती देता है। अत: इन दानों को एक दूसरे के पूरक के रूप में किया जाना चाहिए। इससे बच्चे की प्रगति के बारे में आंकलन करने में व्यापक आधार प्राप्त हो सकेगा।

उपरोक्त विमर्श के आलोक में हम कह सकते हैं कि दीवार पत्रिका/बाल अखबार बच्चे की प्रगति का आकलन करने में हमारे लिए उपयोगी साबित हो सकती है। बच्चे की शैक्षणिक एवं सह-शैक्षणिक प्रगति के मूल्यांकन हेतु सतत एवं व्यापक आकलन के आधार पर निर्णय लेने की आवश्यकता होती है। इस प्रक्रिया में प्रत्यक्ष दिखाई देने वाले व्यवहारगत साक्ष्य हमारे लिए बहुत उपयोगी होते हैं। परंपरागत कक्षा-कक्ष प्रक्रिया में साक्ष्य बहुत कम नज़र आते हैं। यदि दीवार पत्रिका को विषयगत थीम/संबोध के आधार पर विकसित किया जा सके तो इन साक्ष्यों को चिन्हित करने में मदद मिल सकेगी। इसके लिए बच्चों द्वारा वैयक्तिक एवं सामूहिक तौर पर किए गए बाल शोध, कलात्मक अभिव्यक्ति, समाज से की गईं अन्त:क्रिया, साक्षात्कार, बातचीत, चर्चा, प्रोजेक्ट एवं अन्य वे सभी क्रियाकलाप जो बच्चे की प्रगति को अभिविहित करते हैं, को दीवार पत्रिका से जोड़ने की ज़रूरत होगी। इसके साथ-साथ अध्यापक

की ओर से गहन नियोजन की आवश्यकता होगी जिससे दीवार पत्रिका बच्चे की विषयगत पाठ्यचर्या को आगे बढ़ाने में मदद कर सकती है। इसे पठन-पाठन से इतर गतिविधि तक ही सीमित करना उपयुक्त नहीं होगा।

बच्चे के व्यापक आकलन के संदर्भ में यह विधा उपयुक्त दिखलाई देती है। इस पत्रिका के विकास के क्रम में समूह में अन्त:क्रिया करने, काम करने, निर्णय लेने की प्रक्रिया में सहभागिता आदि अनेक ऐसे अवसर होते हैं जिनके आधार पर बच्चे के व्यापक मूल्यांकन के संदर्भ में निर्णय लिये जा सकते हैं।

हमारे सरकारी विद्यालयों में से अधिकांश बच्चे आर्थिक रूप से अलाभकर परिस्थितियों से आते हैं। इन बच्चों को घरों में पत्रिका के कोई अनुभव भी नहीं होते हैं। ऐसे बच्चों के लिए तो दीवार पत्रिका एक वरदान स्वरूप ही है। कम से कम इस माध्यम से गुज़रते हुए उनको पठन कौशल के विकास के अवसर भी मिल सकेंगे।

दीवार पत्रिका का अभी तो बीजारोपण ही हुआ है और इसे नवाचार के रूप में देखा जा रहा है। यकीनन यह बेहतरीन नवाचार है भी। बच्चों की वार्षिक गतिविधि बाल मेला (सपनों की उड़ान) में बाल शोध, नवाचार, प्रोजेक्ट, टी. एल. एम. के साथ-साथ दीवार पत्रिका को प्रदर्शित किया जा रहा है। शुरूआती दौर में यह एक तरह से अच्छा ही है। इस नवाचार का प्रचार-प्रसार होना भी चाहिए। इससे अध्यापकों के बीच इसके दर्शन, प्रक्रिया एवं व्यवहार्यता के बारे में गंभीर विमर्श होने के अवसर रहेंगे।

दीवार पत्रिका के शैक्षणिक निहितार्थ– जनपद के दो विद्यालयों (रा. उ. प्रा. वि. सिमगड़ी (क्षेत्र कपकोट) एवं रा. उ. प्रा. वि. चौरसों (क्षेत्र गरूड़) में विकसित दीवार पत्रिकाओं का अवलोकन एवं इस संदर्भ में बच्चों तथा अध्यापकों से बातचीत के आधार पर दीवार पत्रिका के शैक्षणिक निहितार्थों को लेकर जो समझ बनी है, उसका उल्लेख करना समीचीन प्रतीत होता है। यद्यपि वर्तमान तक जनपद के 100 से अधिक प्रारंभिक विद्यालयों द्वारा दीवार पत्रिकाएँ तैयार की गईं हैं।

अध्यापकों की पहल, उत्साह एवं बच्चों को कक्षा-कक्ष के बाहर सीखने के अवसर देने की प्रतिबद्धता आदि कुछ महत्वपूर्ण घटक हैं जो दीवार पत्रिका के विचार को मूर्त रूप देते हैं। स्वप्रेरित शिक्षकों की उत्साही उर्जा इसके मूल में नज़र आती है वरना व्यवस्थागत कठिनाईयाँ तो कमोवेश हरेक सरकारी विद्यालयों में मौजूद हैं। ऐसे शिक्षक जो परंपरागत शिक्षण ढ़ाँचे से बाहर निकलना चाहते हैं, बच्चों को ज्ञान सृजन के अवसर देना चाहते हैं, बच्चों का अनुशासन के पारंपरिक ढ़ाँचे में बाँधना उचित नहीं मानते, वास्तव में वे ही शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में नवाचार अपना सकते हैं, ऐसे शिक्षक दीवार पत्रिका को लेकर गंभीर भी नज़र आते हैं।

अभी जो दीवार पत्रिकाएँ दिखाई एवं सुनाई पड़ती हैं, उनका स्वरूप मिश्रित है। उसमें भाषा, शिल्प, स्थानीयता से जुड़े सरोकार अधिक नज़र आते हैं। अभी बीजारोपण एवं अंकुरण की अवस्था में हैं। भविष्य में इसे विषयगत थीम/संबोध के आधार पर विकसित करने की संभावनाएँ तलाशी जा सकती

हैं। यह ज़रूरी नहीं कि किसी विषय-विशेष के प्रत्येक संबोध/थीम के लिए दीवार पत्रिका ही विकसित की जाए परंतु यह ज़रूरी है कि यह पाठ्यचर्या को आगे बढ़ाने और उसके उद्देश्यों को प्राप्त करने का एक सशक्त माध्यम बन सके।

दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि बच्चे की शैक्षणिक एवं सह-शैक्षणिक प्रगति के आकलन में इस पत्रिका में बच्चों के योगदान एवं उनकी रचनाशीलता का संज्ञान लिया जाना ज़रूरी होगा। दीवार पत्रिका वर्ष में एकाध बार किया जाने वाला उपक्रम न बन जाए, इसे निरन्तर एवं चक्रीय (Spiral) क्रम में वर्ष भर जारी रखने की आवश्यकता होगी इससे बच्चे के सतत एवं व्यापक मूल्यांकन हेतु महत्वपूर्ण सुराग मिल सकेंगे।

दीवार पत्रिका एक अन्य दृष्टि से भी उपयोगी हो सकती है। यह बच्चों के माता-पिता एवं अभिभावकों को बच्चों की प्रगति के बारे में विश्वसनीय सूचना देने में सक्षम है। बच्चे अपने रुचि के क्षेत्र में बेहतर ढ़ंग से आगे बढ़ रहे हैं, यह अभिभावकों के लिए परम संतोष की बात होगी।

बच्चा विद्यालय में सीखने-सिखाने के क्रम में स्वायत्त इकाई के रूप में सहजता महसूस करता है। कक्षा-कक्ष में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में कई बार 0ne Size Fit All की अवधारणा बच्चों को अपने रुचि के क्षेत्र में आगे बढ़ने में बाधक सिद्ध होती है। इस दृष्टि से विचार किया जाए तो दीवार पत्रिका इस एकरसता को तोड़ने का सशक्त माध्यम है। पत्रिका की विकास प्रक्रिया में बच्चा न केवल सीख रहा होता है वरन् यह भी सीखता है कि आखिर सीखना (Learning to Learn) कैसे होता है ? एक कहानी रचने के क्रम में बच्चा केवल कहानी ही नहीं रचता बल्कि कहानी कैसे रची जाती है? इस प्रक्रिया को भी आत्मसात करता है। यही बात कविता, चित्र, अल्पना, स्थानीयता से जुड़े घटकों की जाँच-पड़ताल के क्रम में घटित होती है। दरअसल यह बच्चों को सीखने की स्वायत्ता का एक सशक्त अभिकरण साबित हो सकता है।

दीवार पत्रिका की रचना प्रक्रिया में सम-व्यस्क से सीखना (Peer Learning), समूह में सीखना, अपने कार्य का स्वयं मूल्यांकन करना, मदद की दरकार एवं मदद लेने में सहजता जैसे उपयोगी जीवन मूल्य विकसित हो सकते हैं। इसमें सफ़ल या असफ़ल होने के बजाए जानना, सीखना एवं अनुभव करना महत्वपूर्ण हो जाता है और असफ़लता का भय पीछे छूट जाता है। इस उपक्रम में बच्चों की तल्लीनता, संलग्नता एवं प्रतिबद्धता यह प्रदर्शित करती है कि वह कक्षा में प्रथम, द्वितीय या तृतीय स्थान प्राप्त करने के लिए यह सब कुछ नहीं कर रहें हैं, वास्तविक अर्थों में ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया में सनद्ध हैं। यह आत्मसंतुष्टि के सरोकारों से जुड़ा है। इसके लिए परंपरागत अनुशासनात्मक भय आवश्यक नहीं है, यह स्व-प्रेरित एवं स्वानुशासित प्रक्रिया है।

दीवार पत्रिका अभी तो शैशवावस्था में है। इसको अधिक उपयोगी बनाने हेतु बहुत से सुझाव सामने आएँगे, बहुत सारे जोड़-घटाव करने होंगे। जो भी होगा, वह इसको और बेहतर बना रहा होगा।

शिक्षा के क्षेत्र में कतिपय नवाचारों के समान यह महज़ रस्मी (Ritual) प्रक्रिया बनकर न रह जाए, इसका ध्यान रखना होगा और इस विधा में निहित संभावनाओं को अवसर में परिणत करने की दिशा में सजग रहना होगा। अभी तो कुछ समय बच्चों को अभिव्यक्ति की आज़ादी का आनंद लेने देना चाहिए और उनके सीखने की स्वायत्ता का सम्मान करना चाहिए।

संदर्भ

एनसीआरटी. 2006. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*, श्री अरविन्द मार्ग, नयी दिल्ली 110016

कपूर, अरूण. 2009. *बदलते विद्यालय तेजस्वी* बच्चे हिंद पॉकेट बुक्स, प्राईवेट लिमिटेड, जे-40, ज़ोरबाग लेन, नयी दिल्ली 110003

गुलाटी, सुषमा. 2009. *जनात्मकता के लिए शिक्षा*, प्रथम संस्करण जून प्रकाशन विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग, नयी दिल्ली 110016

डैनीसन, जार्ज. 1997. *बच्चों का जीवन*, अनुवादक– पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा, ग्रंथ शिल्पी (इंडिया) प्रा. लि., बी-7, सुभाष चौक, लक्ष्मीनगर, दिल्ली 110092

नील, ए. एस. 2004. *समर हिल हिंदी अनुवाद*– पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा, एकलव्य, ई-7/453 एच. आई. जी., अरेरा कालोनी, भोपाल 462016, म.प्र.।

बधेका, गिजू भाई. 1991. *दिवास्वपन, अनुवाद*– काशिनाथ त्रिवेदी, पहला संस्करण, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फ़ेज-।। , वसंत कुंज, नयी दिल्ली 110072

भारत सरकार. 1992. *शिक्षा बिना बोझ के* (Learning Without Burden), यशपाल समिति का प्रतिवेदन, नयी दिल्ली।

मैथ्यूज़, गैरथ वी. 1996. *बच्चों से बातचीत*, अनुवादक– सरला मोहन लाल, ग्रंथ शिल्पी (इंडिया) प्रा. लि., बी-7, सुभाष चौक, लक्ष्मीनगर, दिल्ली 110092

Government of India. *The Right of Children to Free and Compulsory Education Act 2009*, The Gazette of India, Ministry of Law and Justice.

Sharma, Santosh. 2006. *Constructivist Approach to Teaching and A handbook for Secondary Stage*, National Council of Educational Research and Training, Sri Aurobindo Marg. New Delhi 110016